पाठ 7. महान त्याग

पाठ का परिचय

अरबों और रूसियों के बीच घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर के बहुत-से योद्धा मारे गए, बहुत-से घायल हुए। नियम के अनुसार शाम को लड़ाई बंद हो गई। उसी समय अरब सेना का एक जवान अपने चचेरे भाई को देखने निकला। वह दूसरी ओर से लड़ रहा था। अचानक उसे ध्यान आया कि उसके घायल भाई को प्यास लगी हो और वह पानी के लिए तड़प रहा हो तो? उसने एक लोटा पानी भी साथ में ले लिया। एक हाथ में लालटेन और दूसरे में पानी का लोटा लेकर वह लड़ाई के मैदान में जा पहुँचा। थोड़ी ही देर में उसे वह घायलों में पड़ा मिल गया। वह उसे पानी पिलाने ही वाला था कि दूसरे घायल सिपाही की पुकार सुनाई दी,"पानी"। भाई ने उस घायल को पहले पानी पिलाने का आदेश दिया। अरब सैनिक उसके पास लोटा लेकर गया और उसे पानी पिलाने ही वाला था कि तीसरी ओर से आवाज़ आई, "पानी"। घायल सरदार ने उस तीसरे व्यक्ति को पानी पिलाने का आदेश दिया। ज्यों ही अरब सैनिक तीसरे घायल सिपाही के पास पहुँचा और उसे पानी पिलाने वाला था कि उसने अपनी आँखें मूँद लीं। अरब सैनिक दौड़कर सरदार के पास आया और देखा कि उसकी भी जीवन-लीला समाप्त हो चुकी थी। दुख भरे दिल से खुदा की बंदगी करता वह अपने भाई के पास पहुँचा तो वह भी मौत की गोद में सो चुका था। इस कहानी का उल्लेख करते हुए गांधी जी हमें त्याग और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

मानवता की राह पर चलकर आगे बढ़ना। साथियों, पड़ोसियों के साथ सहृदयता का व्यवहार करना। अहिंसा की राह पर चलकर जीवन जीना। त्याग की भावना को अपनाना क्योंकि त्याग की भावना ही सर्वश्रेष्ठ है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पाठ का हाव-भाव के साथ वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताकर पाठ का सरलार्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों की व्याख्या करें। बच्चों से कहानी के एक-एक अनुच्छेद का वाचन करवाएँ। बीच-बीच में बच्चों से प्रश्न पूछें ताकि यह पता चले कि बच्चों को पाठ समझ में आया या नहीं। पाठ समाप्त होने पर बच्चों से पाठ का सार सुनाने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से गांधी जी के जीवन पर चर्चा करें।

- त्याग और बलिदान की बातें करें।
- बच्चों से जानें कि त्याग और बलिदान किस-किस रूप में किया जा सकता है।
- क्या उन्होंने कभी कोई छोटा-सा भी त्याग अपने भाई या बहन के लिए किया है?
- क्या वे वैसा बलिदान कर सकते हैं जैसा अरब सैनिक के भाई या सरदार ने किया?
- ऐसी किसी और घटना के बारे में, यदि वे जानते हों तो कक्षा में सुनाने को कहें।